भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-2, अंक-3	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-15.00
रविवार, 12 मार्च' 78	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.25

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

जय जय गरवी गुजरात:

सहजानंदस्वामी द्वारा पांच सौ परमहंसो को दी गई दीक्षा वास्तव में उनके दिव्य और आध्यात्मिक प्रयोगों का परिणाम था। यदि हम इन परमहंसो के जीवन और कृतित्व पर लिखने की चेष्टा करेंगे तो एक एक का महाभारत जितना विपुल ग्रन्थ हो जायेगा, किन्तु यहाँ तो संक्षिप्त में इतना ही कहना ठीक रहेगा की गुजरात, जिसके अन्तर्गत आज का सौराष्ट्र और कच्छ भी है वहां के निवासिओं के आध्यात्मिक विकास और जीवन परिवर्तन प्रायः इन परमहंसो की संघशक्ति, क्रियाशीलता और निष्ठा के कारण हुआ है।

सहजानंदस्वामी ने उनको दिव्य संदेशवाहक बनाया और उनके इस कार्य द्वारा पृथ्वी पर दिव्यता का अवतरण हुआ। वास्तव में सारी भारतभूमि पर दिव्यता के प्रसरण का यह प्रथम सोपान था। प्रथम दिव्यवर्षा महागुजरात की भूमि पर हुई और धन्य बन गई- जय जय गरवी गुजरात !

अग्रिम परमहंसो:

इन परमहंसो में अग्रिम थे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी, योगमूर्ति पू. गोपालानंद स्वामी, पू. मुक्तानंदस्वामी, पू. नित्यानंदस्वामी पू. ब्रह्मानंदस्वामी, पू. निष्कुलानंदस्वामी, पू. प्रेमानंदस्वामी, पू. स्वरुपानंदस्वामी, पू. शुकानंदस्वामी, पू. सच्चिदानंदस्वामी, पू. आनंदानंदस्वामी, पू. स्वयंप्रकाशानंदस्वामी, पू. व्यापकानंदस्वामी, पू. देवानंदस्वामी आदि।

इन परमहंसो में अनेकों को दृढ आत्मनिष्ठा, युक्त स्थितप्रज्ञता प्राप्त हुई थी, अनेकों को हठयोग की सिद्धियां प्राप्त हुई थी, अनेकों स्वयं समाधिनिष्ठ हो गये थे। इनके सत्यसंकल्प थे, तो कुछ एक मूर्तिमान वैराग्य थे- कुछ एक स्वयं प्रेममूर्ति थे।

इन परमहंसो में से किसी ने अपने जीवन की वैविध्यपूर्ण गहरी अनुभूतियों को काव्य रूप दिया था। गुजराती साहित्य के इतिहास में स्वामिनारायण संप्रदाय के इन साधु कवियों का उज्ज्वल प्रकरण है। कुछ पंक्तियाँ पीढ़ियों से लोकजिह्वा पर प्रचलित

है। आधुनिक गुजराती साहित्य के प्रमुख कवि दलपतराम ने पू. देवानंदस्वामी से काव्य दीक्षा ली थी। इनके सुपुत्र महाकवि न्हानालाल की कविता पर स्वामि नारायण सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव है। इतना ही नहीं, इन्हों ने सहजानंदस्वामी की 'शिक्षापत्री' का सुन्दर अनुवाद किया है। यह परम्परा बाद में भी चलती रही और अद्यापि पर्यंत विद्यमान है।

एक समय की बात है- श्रीजी महाराज ने सब परमहंसो को इकट्ठे कर के प्रश्न किया-

'हे परमहंसो ! आप सब में जो विशिष्ट प्रकार का सामर्थ्य हो वह आप मुझे कहिए' तब सर्व प्रथम सद् मुक्तानंदस्वामी ने कहा, हे महाराज, कोई भी व्यक्ति अत्यंत क्रोध कर के मुझे मारने भी आया हो उसको मैं एक क्षण में ही शान्त कर दूं ऐसा गुण आपके प्रताप से मुझमें है। बाद में ब्रह्मानंदस्वामी ने कहा, 'हे महाराज, रस अलंकार-चमकृति आदि जो काव्य की विशिष्टता है ये सब जो मेरे काव्य में है उसकी तुलना किसी अन्य के काव्य के साथ हो ही नहीं सकती ऐसा काव्य गुण आपके प्रताप से मेरे में है।' महाराज ने भी कहा की यह सत्य है, ऐसा गुण आप में है इसमें किसी भी प्रकार की शंका नहीं है। इसके बाद महाराज की दृष्टि नित्यानंदस्वामी की ओर गई, तब उन्होंने कहा कि आप के प्रताप से ब्रह्मा जैसा वेदज्ञ पण्डित भी मेरे साथ शास्त्रचर्चा के लिये आ जाय तब भी वह मुझे शास्त्रार्थ में पराजित नहीं कर सकता है। यह सुनकर महाराज ने भी कहा कि वास्तव में आप जैसा पण्डित पृथ्वी पर नहीं है। बाद में महाराज ने गोपालानंदस्वामी को कहा, 'योगीराज, आप भी कुछ कहिए।' तब गोपालानंदस्वामी ने कहा, महाराज आप की इच्छा हो तो समग्र ब्रह्मांड के प्राणों को मैं खींच लू ऐसी योग शक्ति आप के प्रताप से मुझे प्राप्त है।

इस प्रकार वार्तालाप चल रहा था और बड़े बड़े परमहंस महाराज की आज्ञा से महाराज के प्रताप से प्राप्त सिद्धियों का वर्णन कर रहे थे, तब गुणातीतानंदस्वामी को मौन बैठे हुए देख कर ब्रह्मानंदस्वामी ने उनकी ओर देख कर कहा, आप अपने विशिष्ट सामर्थ्य के बारे में क्यों कुछ नहीं कहते हो? महाराज तो आपकी प्रशंसा बहुत करते है। तब भी स्वामी कुछ नहीं बोले। अतः महाराज ने स्वयं कहा, ब्रह्मानंदस्वामी, उनका सामर्थ्य असीम है। उसकी प्रतीति जब हम इस भूतल पर नहीं होंगे तब आप सबको होगी। आज जैसे हमारे पीछे लाखों मनुष्य खींचे आ रहे हैं, इसी प्रकार उनके पीछे भी खिंचे आयेंगे। और वास्तव में यही हुआ, सहजानंदस्वामी का यथार्थ माहात्म्य मुमुक्षओं को गुणातीतानंदस्वामी ने समझाया। इतना ही नहीं, अपने संसर्ग में आने वाले अनेक प्रकार के छोटे-बड़े, गरीब-धनिक, ज्ञानी-अज्ञानी लोगों की चेतना जागृत करके, इन्होंने उनको ऊर्ध्वगामी बनाया। साकार ब्रह्म के अवतार रूप मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने सेवा, भक्ति, निर्मानिता, निष्कामवृत्ति आदि अनेक कल्याणप्रद गुण उनकी चरम सीमा पे अपने में मूर्त करके साधुता का एक सम्यक् उदाहरण जगत के समक्ष प्रस्तुत किया। यदि साकार ब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी पृथ्वी पर अवतरित नहीं होते तो पूर्ण पुरूषोत्तमनारायण श्रीसहजानंदस्वामी की दिव्यता और उनकी कल्याणयोजना मानवगम्य नहीं होती। अक्षर और पुरूषोत्तम जीव मात्र के सच्चे माता-पिता है। प. पू. काकाजी के शब्दों में – Without him (Akshar), I (Purushottam) remain unmanifest and without me (Purushottam) He (Akshar) exists not. ऐसा अविनाभावी सम्बन्ध महाराज और स्वामी के युगल रूप का है।

सहजानंदस्वामी के उपरोक्त कथित पांच सौ परमहंसों ने सर्व समर्पित कर के धर्मशिखा को प्रज्वलित किया। इसके अतिरिक्त सहजानंदस्वामी के अनगिनित गृहस्थ शिष्य भी थे, जो स्वामिनारायण भगवान के एक शब्द पर सब कुछ अपनी एक-एक प्रवृत्ति समर्पित करने के लिए तत्पर थे। सहजानंदस्वामी भी केवल संतों की ही परीक्षा नहीं करते थे, इन गृहस्थ शिष्यों की भी अग्नि परीक्षा करते थे और उनको शुद्ध कंचनरूप बना देते थे।

शासितुम् योग्यः इति शिष्यः

एक समय की बात है, सहजानंदस्वामी सौराष्ट्र के बंधिया गांव में बिराजमान थे। भुज (कच्छ) के दिवान सुन्दरजी की महाराज के प्रति निष्ठा थी। वह अपने राजा के लड़के की बारात लेकर भुज से निकले थे। वे जब गोंडल तक आये तब इनको समाचार मिला कि महाराज बंधिया में बिराजमान हैं। अतः इन्होंने पूरी बारात को गोंडल में रुकने का आदेश दिया और कहा–'मुझे बंधिया में कुछ आवश्यक कार्य है अतः जा रहा हूं और जल्दी से वापस लौट आऊंगा।' सुन्दरजी घोड़े पर सवार होकर शीघ्र बंधिया पहुंच गये। महाराज का दर्शन किया और नमस्कार किया। महाराज ने पूछा–'कौन आये है?' सुन्दरजी ने कहा–'मैं हूं, महाराज, आपका दास।' महाराज ने मन ही मन सोचा की आज सुन्दरजी की परीक्षा की जाय। अतः प्रश्न किया–'दास का लक्षण क्या?' सुन्दरजी ने उत्तर दिया–'जो स्वामी की आज्ञानुसार करे वह दास।' यह सुनकर महाराज ने आज्ञा की–'अभी के अभी जाइए और मुण्डन करवा लीजिए और साधु बन जाइए।' सुन्दरजी सच्चे भक्त थे। उन्होंने आगे पीछे का सोचा ही नहीं और शीघ्र ही नाई को बुला कर केश मुण्डवा दिए, साधु का वेश धारण किया और आकर महाराज के पांव में पड़ गये। महाराज इनकी आज्ञाधारकता और भक्ति देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनको काशी जाने की आज्ञा दी। सुन्दरजी ने प्रसन्नता से, हर्षित वदन से आज्ञा मान ली और काशी की ओर चल पड़े।

यह सारा प्रसंग सद्. मुक्तानंदस्वामी देख रहे थे। उन्होंने महाराज को सहज स्वर में कहा– 'महाराज, सारे कच्छ के इलाके में बहुत कष्ट है। हमें ठहरने का और निर्विघ्नता से सत्संग प्रचार करने का एक मात्र सहारा ये सुन्दरजी थे। आपने जिस डाली पर हम बैठ सकते थे, उस को ही काट दिया। महाराज ने कहा–'अच्छा, ऐसा है? तो बुलाइए वापस।' एक घुड़सवार गया और सुन्दरजी को वापस बुलाया गया। सुन्दरजी ने आकर महाराज को प्रणाम किया। महाराज ने फिर पूछा– 'कौन आये हैं?' सुन्दरजी ने वही उत्तर दिया–'मैं हूं, महाराज आपका दास।' तब महाराज ने फिर प्रश्न किया, दास का लक्षण क्या? सुन्दरजी ने फिर उत्तर दिया–'जो स्वामी की आज्ञानुसार करे वह दास।' महाराज ने कहा–'अच्छा, हमारी आज्ञा है कि आप साधु का वेश त्याग कर फिर गृहस्थ के कपड़े पहन लीजिए।'

सुंदरजी ने महाराज की आज्ञानुसार गृहस्थ के कपड़े पहन लिये। महाराज प्रसन्न हुए और उनके वक्षःस्थल पर अपने चरणारविंद रख कर उनको अनुगृहीत किया। बाद में जब वे महाराज की आज्ञा पाकर वापस जा रहे थे। तब उन्होंने कहा– 'महाराज, आपने मेरी परीक्षा ली सो तो ठीक, किन्तु दूसरे किसी की ऐसी परीक्षा मत लेना।' इन वचनों से महाराज को स्पष्ट हो गया कि सुन्दरजी के मन में थोड़ा-सा अहंकार आया है। मगर उस समय महाराज मौन रहे और प्रसन्नता से उनको विदाई दी। महाराज ने मन में सोच लिया-किसी अन्य प्रसंग में उनको इस अहंकार से मुक्ति दिलवानी पड़ेगी।

–क्रमशः

Ultimate Goal of Life

Generally all the religions of the world have their own fundamental assumptions, but their principles of purification and spiritual advancement are practically the same. However, Lord Swaminarayana has specifically and clearly advocated the most easiest path on the fundamental basis of spiritualism, which is expressed in the existence and manifestation of the Divine personality in the form of the supremely realised saint or real Sadguru. This is the safest and easiest way of all other paths, because the basis of spiritualism is not any quality or powers or means but the actual manifestation of the divinity in the form of real Sadguru. Fortunately according to our Narayana's boons as per spiritual hierarchy, we have the continuous manifestation of the divinity in the different human forms has Sadguru. The last one was universally known in the name of Yogiji maharaj.The same divine tradition or Sadguru parampara of spiritual disciplinie succession has been maintained in our Gunatit Samaj for our vision where we have unique and distinct divine personalities in the form of Param Pujya Swamiji and Param Pujya Pappaji. *If we are realy sincere for spiritual development along with our household affairs, we will surely get all sorts of soloution and satisfaction for our inner confilcts, unsatisfied desires, our ambitions and for self and supreme realisation.

Consequently,the ultimate goal of life maintioned by all religions is theliberation of the soul from bondage-from hostile forces and from al short-comings of our life. The descriptions may differ but the goal is the same i.e. the emancipation of the soul for self and suprime realisation in this life. All saints and spiritual masters also have themselves lived the divine life as an example to be followed by us. Their teachings and preachings may be narratd in different manners and life styles, but in essence it is summed up in two fundamental ways—

(a) to overcome the crude desires conflicts, dualities and ambitions, the vices and the short-comings of our life. Human being is normally governed by the crude nature and is full of jealousy, conflicts and confusions. Everybody normally desires peaces, confort, power and gratification in this life, but it is not attainable when such desires are not properly understood, channelized in right direction and sublimated. Human beings therefore live their life in wrong directions without any proper and clear guidence and vision. Real Sadguru therefore becomes the guide and

---

* The writer, Pujya Dadukaka however has not mentioned his name, he himself is also one of the spiritual heirs and is carrying out the same supermental working for happines, redemption salvation and betterment of manking.

—Editor

pathfinder for each individual according to his crude nature and his capacity to develop in future. The desires then give full satisfaction and one can enjoy the life happily and contened without taking Sanyasa or leaving the world.

(b) to overcome the ego sense which prompts the mind ignorantly to bind and encircle one's life with "I" and "mineness." The life is lived ignorantly and in darkness without any goal. With all the amenities and scientfic and technical development and enormous means at our disposal, human being is still unhappy, discontned and can not overcome the four basic ingredients inherited from the animal life-viz, fear,sex-security and ego sense.

The reals Sadguru or Brahmaswarup saint can positively lift the soul from the above two limitations and illumate his life with spiritual development in the form of divine qualities which ultimately lead to Nirvikalpa Samadhi-the pure contentless consciousness. In another form it is known as Supramental consciousness or Brahmic consciousness or Siddha Yoga.

Lord Swaminarayana has given us specific boons by His infinite grace and love. If we take up this opportunity for accepting these boons and live the life by surrendering to a real sadguru for fulfilling the ultimate goal, the result will be as Jesus said—"Heaven is within us and now it is also without.' Here the enternal conflict of human mind ends as said in Gita—'Wherever is Krisha,

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	***:***	***Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052***
2. Periodicity of its Publication	***:***	***Monthly***
3. Printer's Name	***:***	***Sadhu Mukund Jivandas***
Nationality	***:***	***Indian***
Address	***:***	***Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052***
4. Publisher's Name	***:***	***As above***
Nationality	***:***	
Address	***:***	
5. Editor's Name	***:***	***As above***
Nationality	***:***	
Address	***:***	
6. Owner's Name	***:***	***As above***
Nationality	***:***	
Address	***:***	

I, Prabhakar Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Sadhu Mukundjivandas

Signature of Publisher

Date: 12th March, 1978

Yoga's Lord, wherever is Partha, the archer assured are there prosperity, victory and happiness.'

Let us have this divine vision developing such love intimacy with our spiritual master and the fellow beings and render the services with whatever is best in us as an offering to God without expecting any fruit. Any one can have this unique spiritual experience, if he follow this with an open mind and sincere aspiration in the company of real path-finder. We have such centres in Gujarat, Maharashtra and Delhi. Anyone can take advantage of such Satsang and have this unique spiritual experience and realisation.

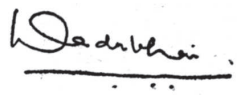

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	18.3.78 शनिवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
2.	दि.	20.3.78 सोमवार	एकादशी, उपवास
3.	दि.	24.3.78 शुक्रवार	हुताशनी, अ.म.मु. भगतजी महाराज का प्राकट्यदिन
4.	दि.	3.4.78 सोमवार	पापमोचनी एकादशी, उपवास
5.	दि.	17.4.78 सोमवार	रामनवमी, श्रीस्वामिनारायण जयंती, उपवास
6.	दि.	19.4.78 बुधवार	कामदा एकादशी, उपवास
7.	दि.	4.5.78 गुरुवार	प.पू. स्वामिश्री की जयंती

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110077 फोनः 524051